an>

Title: Need to include 'Magahi' language in the eighth schedule to the Constitution.

श्री सुनील कुमार सिंह (चतरा) : माननीय अध्यक्ष जी, एक निवेदन के साथ मैं अपनी बात शुरु करूंगा कि लोक सभा के इतिहास में मेरी जानकारी में संभवत: पहली बार यह विÂषय उठ रहा है, इसलिए कृपा करके मुझे मेरी बात पूरी कहने की अनुमति दें। मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा। मैं कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ही रखूंगा।

हमारी एक मगही भाÂषा है जो झारखंड, बिहार और नेपाल के बड़े हिस्से में बोली जाती है। लगभग दो करोड़ लोग इस भाÂषा को बोलने वाले हैं। इस भाÂषा की खासियत यह भी है कि इस भाÂषा की अपनी लिपि भी है। जिसे कैथी के नाम से जानते हैं। अभी तक इस भाÂषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया है।

महोदया, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि ग्रामरियर कच्छयानो ने मगही भाÂषा के महत्व को लिखते हुए कहा है कि यह भाÂषा सभी भाÂषाओं की बुनियाद है। प्रकांड पंडितों और अन्य लोगों द्वारा काल की शुरुआत में इस भाÂषा को बोलने की चर्चा की गई है। सर्वोच्च एवं पूज्य भगवान बुद्ध की जो तपोस्थली है, वह भी इसी भाÂषा के क्षेत्र में आती है।...(व्यवधान)

मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र, जो आज बिहार की राजधानी पटना है, शिशुनाग वंश ने मगध साम्राज्य को स्थापित किया था। मगध साम्राज्य का भारत में 684 बी.सी. से 320 बी.सी. तक उल्लेख है। इसलिए मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि इस भाÂषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए।...(व्यवधान)

अंत में हम रउरा से विनती करब कि मगध ऐतिहासिक पृÂठभूमि और विश्व में मगही भाÂषा के प्रचलन को देखते हुए, मगही भाÂषा के संविधान के आठवीं अनुसूची में जोड़े के कृपा कइल जाए। इ उपकार ल, हमनी मगही भाÂषी जीवन भर राउर आभारी रहब। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरों प्रसाद मिश्र, कुँवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल और श्री रविन्द्र कुमार पाण्डेय को श्री सुशील कुमार सिंह द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।